Original Article
ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

आधुनिक शिक्षा में जन संचार माध्यमो का छात्रो पर प्रभावो की विवेचना

शोधार्थी,मेघा साहू
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र
शोध निर्देशक,डॉरिशिकेश यादव
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र

Abstract

मीडिया का शिक्षकों, पत्रकारों, निर्माताओं, अन्य व्यावसायियों और बच्चों के प्रशिक्षण में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। जन संचार मीडिया (जैसे टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा और पत्रिका आदि) का उद्देश्य मनोरंजन था लेकिन इसका उपयोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है। जनसंख्या में वृद्धि और जीवन शैली के विकास ने मनोरंजन की मांग को काफी तेज कर दिया है।ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो विभिन्न क्षेत्रों जैसे मौसम, राजनीति, युद्ध स्वास्थ्य, वित्त, विज्ञान, फैशन, प्रौद्योगिकी, आहार और पोषण, अपराध और हिंसा, शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय, प्रबंधन और रोजगार के स ुवसरों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखते हैं। यह रेडियो, टेलीविजन, सोशल मीडिया प्लेटफार्म और विभिन्न प्रकार की पत्रिकाओं और लेखों से प्राप्त किया जा सकता है।राजनीति और समाचारों से संबंधित डिजीटल प्लेटफार्म पर पोस्ट, संदेश और अधिसूचनाएं मित्रों द्वारा या सोशल मीडिया पर अनुसरण करने वाले लोगों द्वारा साझा की जा सकती हैं। इसलिए, अनिच्छुक व्यक्ति भी समसामायिक समाचारों के बारे में जान सकते हैं या जानबूझकर ज्ञान प्राप्त किये बिना अपडेट प्राप्त कर सकते हैं।

Keywords: मीडिया जन संचार शिक्षा

1.1प्रस्तावना

डिजिटल मीडिया विद्यार्थियों को सीखने के बहुआयामी अवसर प्रदान करती है । श्रीवास्तव (2020) अपने लेख में कहते हैं कि–'डिजिटल दुनिया बच्चों के लिए एक सपनों की दुनिया की तरह है जहाँ उनके लिए कुछ खोजने एवं अनुभव करने हेतु बहुत कुछ है जिन इच्छाओं आकांक्षाओं को बच्चे अपने वास्तविक जीवन में पूरा नहीं कर पाते हैं उन्हें वह विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से पूर्ण कर लेते हैं जैसे– डिजिटल गेम में सैनिक आदि पात्रों की भूमिका का चयन करना ।' एलन (2014) भी इस संदर्भ में कहते हैं कि–

Original Article
ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

'डिजिटल मीडिया बच्चों में सकारात्मक प्रेरणा का बहुत ही सुगम स्रोत है ।' डिजिटल शिक्षा प्रदान करने में यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सएप, स्काइप, पॉडकास्ट (ऑडियो–वीडियो की डिजिटल रिकॉर्डिंग जिसे क्रिएट या डाउनलोड किया जा सकता है), गूगल मीट, माइक्रोसॉफ्ट टीम, गूगल क्लास, ई–बुक, ई–जर्नल्स, वर्चुअल क्लास, ब्लॉग, वेबसाइट, ट्विटर एवं ईमेल जैसे मीडिया के अनेकों साधन एवं प्लेटफॉर्म्स महती भूमिका निभा रहे हैं । अतः स्पष्ट है कि उपकल्पना किसी समस्या का अस्थाई अनुमान है, जिसके प्रमाणीकता की जाँच अभी करना होता है। प्रस्तुत अध्ययन को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित उपकल्पनायें निर्मित की गई हैं :

- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से परम्परागत मूल्यों एवं प्रतिमानों में परिवर्तन आया है।
- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन आया है।
- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिल रहा है।
- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन हो रहे हैं।
- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से युवाओं के जीवनशैली में परिवर्तन आया है।
- जनसंचार माध्यमों के प्रभाव से युवाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है।

1.2संबंधित साहित्य की समीक्षा

साहित्य की समीक्षा का अर्थ है कि शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। साहित्य की समीक्षा सृजनात्मक कार्य हैं। इसमें शोधार्थी को अपने अध्ययन को युक्तिपरक कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को विलक्षण ढंग से एकत्र करना होता हैं।

षिलर हरबर्ट आइ 2017 ने वेब कला का एक प्रसाधन के रूप में अध्ययन किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि उपभोक्ता इंटरनेट को एक महत्त्वपूर्ण प्रसाधन के रूप में देखते हैं। लेकिन पराम्परागत प्रसाधन अधिक मंहगे हैं। बहुमाध्यमों का प्रयोग इसलिए नहीं किया जाता क्योंकि इस में प्रयुक्त माध्यम का प्रयोग चित्र एवं विषय वस्तु को समझने में कठिनाई होती हैं।

आर., मूर्ति, एवं जे. डेमिनिक (2015) ने तमिलनाडु के. कोलमबदूर विश्वविद्यालय के ई–संसाधनों का प्राध्यापको द्वारा प्रकाशित करने के उद्देश्य से उपयोग पर अध्ययन किया। **निष्कर्ष** में यह पाया कि अधिकांश प्राध्यापक ई–संसाधनों एवं जर्नल का उपयोग स्वयं के प्रकाशित करने के उद्देश्य से

ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

करते हैं। बहुत से उत्तरदाता गुगल का उपयोग प्रकाशित संसाधनों को खोजने के लिए करते हैं। कुमार (2021) ने भी अपने शोध में 'कोविड–19 से स्थिति सामान्य होने तक डिजिटल माध्यम से शिक्षण–अधिगम को चालू रखना पाया था।' सोशल मीडिया पर शिक्षाविद एवं विद्यार्थी एनईपी– 2020, शिक्षा क्यों जरूरी, वर्कशॉप, ओरियंटेशन, रिफ्रेशर, फैकेल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम, कोविड जागरूकता वेबिनार्स, विभिन्न शिक्षण विषयों को सीखने की आसान ट्रिक, शिक्षण–सहायक सामग्री निर्माण जैसे कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण कर तथा ऑडियो–वीडियो अपलोड कर अपनी प्रतिभा का परिचय दे रहें हैं।

1.3शिक्षा में डिजीटल मीडिया के प्रभाव

शिक्षा में डिजीटल मीडिया की शुरुआत और परिचय के साथ विभिन्न नवाचारी शिक्षण तकनीकों और पद्धतियों का उपयोग किया गया है। संस्थान अकादमिक दृढ़ता में सुधार लाने के लिए अपनी प्रणाली को परिष्कृत कर रहे हैं। छात्रों के बीच शिक्षण प्रक्रिया को रोचक और बेहतर बनाने की प्रक्रिया में विश्वविद्यालय और स्कूल डिजीटल और सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं। पेटिका शिक्षा पर डिजीटल और सोशल मीडिया के प्रभाव के विषय पर अधिक प्रभाव से बनाती है। नई शिक्षा व्यवस्था केवल चाक और बात पर निर्भर नहीं है, कक्षाओं को पुर्नपरिभाषित किया जा रहा है और शिक्षक इन नये जीवंत दृश्य संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं जो स्कूल के बाहर छात्रों के जीवन में सामान्य हैं। छात्र भी यह स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि वे शिक्षक से क्या अपेक्षा करते है और वे कैसे सीखना चाहते हैं: डिजीटल और सोशल मीडिया प्लेटफार्म का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है जिसका असर लोगों की जिदंगी पर भी पड़ रहा है। केवल कामकाजी पेशेवर लोग ही डिजीटल और सोशल मीडिया का उपयोग नहीं कर रहे हैं, बल्कि छात्रों द्वारा सोशल मीडिया के उपयोग में भारी वृद्धि हुई है वेव्यस्कों की तुलना में अपने मित्र समूह या वेबसाइटों से ऑनलाइन सीखने से प्रेरित होते हैं। शिक्षकों और स्कूलों द्वारा छात्रों के अधिगम, सम्प्रेषण और संलग्नता को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर टल और मुफ्त वेब एप्लीकेशन का उपयोग करने के साथ, सोशल मीडिया का उपयोग उनकी शैक्षणिक उपलब्धता को विचलित कर रहा है। पारंपरिक अधिगम पद्धति की तुलना में जो व्यक्तियों को अपनी अधिगम की गतिविधियों को विकसित करने और बनाये रखने के लिए कुछ अवसर प्रदान करती है, सोशल मीडिया पर आधारित अधिगम के मंच अधिगम का नियंत्रण स्वयं शिक्षाविदों के हाथों में रखते है क्योंकि 21वीं सदी में प्रौद्योगिकी नाटकीय परिवर्तन ला रही है क्योंकि शिक्षण संस्थान शिक्षण के पार ंपरिक माध्यमों से अधिक परिष्कृत पद्धतियों की और जा रहे हैं। कुछ तरीके जिनसे डिजीटल और सोशल मीडिया ने

Original Article

ISSN: 2349 - 4891

International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

शिक्षा क्षेत्र में सुधार किया है, पारंपरिक शिक्षा के एक भाग के रूप में सोशल मीडिया छात्रों के लिए आकर्षक है क्योंकि यह अधिगम की क्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, और सहभागीता अध्ययन और सामाजिक अन्तःक्रिया दोनों को बढ़ाता है। आधुनिक समय की कक्षाए ं चिरस्थाई आनंद प्रदान करती है क्योंकि इसने शिक्षार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों को स्मार्ट कक्षाओं के माध्यम से टीमवर्क का प्रबंधन करने और एक दूसरे के साथ मजबूत सम्प्रेषण करने में सक्षम बनाया है। सोषल मीडिया प्लेटफार्म विभिन्न प्रकार के उपकरण प्रदान करते हैं जिनका शिक्षार्थी अपनी व्यक्तिगत अधिगम शैली के अनुरूप सर्वोत्तम रूप से मिश्रण और मिलान कर सकते हैं, और अपनी अकादमिक सफलता को बढ़ा सकते हैं। यह लोगों के साथ संगठन बनाने में भी मदद करता है, और छात्रों को नेतृत्व कौशल विकसित करने, कार्यक्रम आयोजित करने आदि में मदद करता है जो सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देता है। लोगों के लिए सामाजिक नेटवर्क का उपयोग करके नीयत प्रोजेक्ट के लिए विभिन्न भौगा`लिक पृष्ठभूमि के लोगों के साथ मिलकर काम करना भी आसान है। उदाहरण के लिएः उनके लिए सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर समूह बनाना आसान है या यहाँ तक कि नीयत कार्य के संबंध में इनपुट का आदान–प्रदान करने और सूचना वितरित करने के लिए हेशटैग का उपयोग करना भी आसान है। इस मीडिया में संचार के साधन कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टेबलेट, लैपटॉप, एलसीडी प्रोजेक्टर, स्मार्टध्इंटरैक्टिव बोर्ड, विभिन्न एप्स एवं सॉफ्टवेयर आदि होते हैं । इसके तहत कंप्यूटर द्वारा किसी भी प्रकार की सूचना, चित्र, चलचित्र आदि को डिजिट के रूप में बदला जा सकता है। यह साधन विद्यार्थी और शिक्षक के मध्य अंतःक्रिया को सजीव (स्पअम) रूप में भी प्रसारित कर सकते हैं। पलक झपकते ही सूचना को किसी भी समय कहीं भी बैठे विद्यार्थी तक भेज सकते हैं, स्टोर तथा रिकॉर्ड कर सकते हैं। शिक्षण–अधिगम निर्बाध रूप से संचालित करने हेतु भारत सरकार ने विभिन्न डिजिटल मीडिया के साधन यथा– दीक्षा पोर्टल ,रीड अलोंग एप, संपर्क बैठक, ई–पाठशाला, निष्ठा प्रोग्राम, स्वयं, राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी, स्पोकन ट्यूटोरियल, वर्चुअल लैब– क्लास, मोबाइल एप्लीकेशन तथा शिक्षा के लिए निःशुल्क और ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर आदि के माध्यम से विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों तक पहुंच बनाने का प्रयास किया है। कोविड काल में डिजिटल मीडिया के द्वारा ही शिक्षा विद्यार्थियों के द्वार पर पहुँच रही है।

1.4शिक्षा के क्षेत्र में सहायक सामग्री

ये दृश्य–श्रृव्यप्रभावी उपकरण हैं जो अधिगम की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं और निरूपण के माध्यम से अधिगम की प्रक्रिया में योगदान देकर

Original Article
ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

मन को अपील करते हैं। उन्हें बहु–संवेदी सामग्री भी कहा जाता है क्योंकि कि वे पूरक उपकरण है जिनके द्वारा शिक्षक, एक से अधिक संवेदी नेटवर्क के अनुप्रयोग के माध्यम से अवधारणाओं और व्याख्याओं को स्पष्ट करने, स्थापित करने और उन्हें सह–संबंधित करने में सक्षम होते हैं। वे रंग, चाल या रिकार्ड किये गये संदेशों या यहां तक कि ऐसी सामग्री के उपयोग के माध्यम से छात्र को प्रोत्साहित करते हैं जो शिक्षार्थी की इच्छा और रुचि को आकर्षित करता है (नाइजी, 2016)। कक्षाओं में दृश्य–श्रव्य सहायक साधनों का उपयोग, संरचित शिक्षण की उपलब्धि में मदद करता है। दृश्य–श्रव्य सहायक साधनों के ये लाभ हैं:

- यह विधि पारंपरिक एक तरफा सम्प्रेषण से बचने में मदद करेगी जो इसकी विशेषता है और इसे जटिल प्रत्यक्ष अन्तवैयक्ति संप्रेषण के रूप में उचित रूप से उपयोग किया जा सकता है।
- यह शिक्षार्थियों को यथार्थवादी अनुभव प्रदान करने में मदद करता है जो ध्यान लगाने और एकाग्रता के निर्माण में मदद करता है। साथ ही साथ घटना को समझने में मदद करता है।
- यह सोच और समझ को उद्दीप्त करने में सहायक है।
- श्रव्य–दृश्य सहायक साधन कक्षा के उद्देश्यों को बढ़ाते हैं और छात्रों की विषय के बारे में जानकारी को प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के अतिरिक्त तरीके प्रदान करते हैं।

2.इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी

यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत् वैज्ञानिक सोसाइटी है। इसका लक्ष्य सूचना, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उद्योग प्रमुख गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह एडवांस डिप्लोमा, एमसीए समकक्ष और एम टेक स्तर के पाठ्यक्रमों के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण प्रदान करता है।

3.डिजीटल पुस्तकालयों

यह विभिन्न स्वरूपों में बड़ी मात्रा में शैक्षणिक सामग्री के ई–संसाधनों का एक डिजीटल संग्रह है, जिसे बहुभाषी सामग्री लेने के लिए डिजाइन किया गया है जा` शैक्षणिक स्तरों और विषयों पर छात्रों की सेवा करता है। इस परियोजना का लक्ष्य एकल एक्सेस विंडो प्रदान करना है जो दुनिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय डिजीटल पुस्तकालयों को जोड़ता है। यह छात्रों को ई–बुक्स, ऑडियो बुक्स, भाषण सामग्री, थिसिस, रिर्पोटस, लेख, जरनलस, प्रश्नपत्र और उनके हल, सिमुलेशन टूल्स और वीडियो लेक्चरस, के रूप में विभिन्न विषयों में संसाधनों और सामग्री को लागत प्रभावी और सुविधाजनक तरीके से उपलब्ध कराती है।

ISSN: 2349 - 4891
International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

शोध की परिकल्पनाओं को सन्दर्भ में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किये गये–

- शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के महत्त्व एवं प्रयोग की स्थिति की विवेचना करना।
- उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट और पाठ्य पुस्तकों के महत्त्व का विश्लेषण करना।

4.निष्कर्ष

निष्कर्ष में यह पाया कि अधिकांश उत्तरदाता ई–संसाधनों के उपयोग और आई सी.टी. संसाधन एवं सेवाएं को आवश्यक मानते हैं तथा उपयोग की एक महत्त्वपूर्ण वस्तु बन गई हैं। लिंग के आधार पर ई–संसाधनों के उपयोग में कोई अंतर नहीं पाया गया।

5.सुझाव

शिक्षा सम्बंधी बनायी जाने वाली नीतियों मे कम्प्यूटर व इंटरनेट शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थान देना चाहिये। आने वाले वक्त में जनसंपर्क के लिए सूचनाओं के संप्रेषण से ज्यादा जरूरी यह मुद्दा होगा कि उन संप्रेषित सूचनाओं की विश्वसनीयता कैसे बनी रहे। अभी यह होता है कि जनसंपर्क में सूचनाओं का प्रसारण (broadcast) किया जाता है, परंतु आगे चलकर सूचनाएं किसी खास विषयों के विशेषीकृत लक्ष्य के लिए संप्रेषित (narrowcasting) की जाएंगी। गोया कि युवाओं, वृद्धों, नौकरीपेशा, व्यापारी, विद्यार्थियों वगैरह–वगैरह अलग वर्गों को ध्यान में रखकर अलग–अलग विशेषीकृत जनसंपर्क की व्यवस्था की जाएगी।

References

[1] वर्मा, रामपाल सिंह – शिक्षण तकनीकी, मॉडर्न पब्लिकेशन, 1982–83.

पाण्डेय, रामशकल –शिक्षा के मूल सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, प्रथम संस्करण 2001.

[2] बेस्ट जॉन डब्ल्यू – रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिन्टर्स हॉल प्राइवेट, नई दिल्ली, 1993.

[3] शर्मा, आर.ए. – शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2006.

[4] रायजादा, बी.एस.– शिक्षा के अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, प्रथम संस्करण 1997.

[5] दौड़ियाल सच्चिदानन्द– शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, व पाठक अरविन्द राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण 1972.

[6] षिलर हरबर्ट आइ – अण्डर एजूकेशन रिसर्च एनाइज रिवाईल्ड न्युयार्क, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, संस्करण 2017.

[7] आर., मूर्ति, एवं जे. डेमिनिक –डवलपमेंट साइकोलॉजी, एवलटन तथा टाईलर न्यूयार्क, संस्करण .

[8] . पी. राजकुमार– अभिव्यक्ति एवं माध्यम, राष्ट्रीय शैक्षिक उप्पल श्वेता अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, प्रथम संस्करण 2006.

[9] . वर्मा, रामपाल सिंह – शिक्षण तकनीकी, मॉडर्न पब्लिकेशन, 1982–83.

[10] . पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा के मूल सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, प्रथम संस्करण 2001.

ISSN: 2349 - 4891

International
Journal of Recent Research and Applied Studies
(Multidisciplinary Open Access Refereed e-Journal)

[11] . बेस्ट जॉन डब्ल्यू – रिसर्च इन एजूकेशन, प्रिन्टर्स हॉल प्राइवेट, नई दिल्ली, 1993.

[12] . शर्मा, आर.ए. – शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2006.

[13] . रायजादा, बी.एस.– शिक्षा के अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, प्रथम संस्करण 1997.

[14] दौड़ियाल सच्चिदानन्द– शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, व पाठक अरविन्द राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण 1972.

[15] वेल्डेलन – अण्डर एजूकेशन रिसर्च एनाइज रिवाईल्ड न्युयार्क, मैकग्राहिल बुक कम्पनी, संस्करण 1981.

[16] . गुड एन. एफ. –डवलपमेंट साइकोलॉजी, एवलटन तथा टाईलर न्यूयार्क, संस्करण 1962.

[17] Dr. R, S, Sharma (2006). Media Teaching and Open Learning. Jaipur : Mangal Deep Publications. |

[18] Saxena, Ambrish (2012). Issue of communication development and society. Gaur, Mishra, Anuradha(Eds.), New Media effect on psychology of college student (P.P. 138-143). New Delhi : Kanishka Publisher, Distributors. |